# भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ

भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ

बिना भक्ति के हो गए करम काले,
लगाने तुम्ही से लगन आ गया हूँ ।
भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ...

जभी जनम पाया, तभी भव में डूबा,
मैं करने को भव से तरन आ गया हूँ ।
भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ...

कई जनम पाए कई योनियों में,
ख़त्म करने आवागमन आ गया हूँ ।
भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ...

तेरे जल हैं करते हृदय तम को निर्मल,
मैं करने मधुर आचमन आ गया हूँ ।
भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ...

चरण चूमते ऊँचे पर्वत तुम्हारे,
मैं चढ़ के चढ़ाई कठिन आ गया हूँ ।
भवानी तुम्हारी शरण आ गया हूँ...

कवि: ब्रह्मलीन स्वामी श्री अखिलेश जी
स्वर: जसवंत सिंह जी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1556/title/bhawani-tumhari-sharan-aa-gaya-hun

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |